Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 482–485

CURRENT SCENARIO OF ANTYODAYA PHILOSOPHY OF PANDIT DEENDAYAL UPADHYAYA

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अन्त्योदय दर्शन का वर्तमान परिदृश्य

Durga Prasad Singh [1], Azad Pratap Singh [2]

[1] Assistant Professor, Department of Political Science, Mahamaya Government Degree College Shravasti (U.P.)
[2] Assistant Professor, Department of Political Science, M.L.K.P.G. College, Balrampur, Uttar Pradesh

ABSTRACT

English: Pandit Deendayal Upadhyaya was not just a politician, he was also a high class thinker, philosopher and writer. In this form, he had imagined a developed nation in a strong and balanced form. He had given up personal interests and comforts. He had no ambition in his personal life. He had dedicated his life to the society and the nation. This is what makes him great. Even after being continuously active in politics, he used to take out time for study and writing. For this, he used to cut down his rest time. In this, he also used to meet people and travel continuously. He liked to live among the common people. Perhaps this was the reason that he had understood the problems of the common man of the country very well. This subject was included in his thinking and study.

Hindi: पं0 दीनदयाल उपाध्याय राजनेता मात्र नहीं थे, वह उच्च कोटि के चिंतक, विचारक और लेखक भी थे। इस रूप में उन्होंने श्रेष्ठ शक्तिशाली और संतुलित रूप में विकसित राष्ट्र की कल्पना की थी। उन्होंने निजी हित व सुख सुविधाओं का त्याग कर दिया था। व्यक्तिगत जीवन में उनकी कोई महत्वाकांक्षा भी नहीं थी। उन्होंने अपना जीवन समाज और राष्ट्र को समर्पित कर दिया था। यही बात उन्हें महान बनाती है। राजनीति में लगातार सक्रियता के बाद भी वह अध्ययन व लेखन के लिये समय निकालते थे। इसके लिये वह अपने विश्राम के समय में से कटौती करते थे। इसी में लोगों से मिलने जुलने और अनवरत यात्राओं का क्रम भी चलता था। आमजन के बीच रहना उन्हें अच्छा लगता था। शायद यही कारण था कि वह देश के आम व्यक्ति की समस्याओं को भलीभांति समझ चुके थे। यह विषय उनके चिंतन व अध्ययन में समाहित था।

Keywords: Democracy, Swaraj, Skill, Training, Self-Employment, Schemes लोकतंत्र, कला स्वराज्य, कौशल, प्रशिक्षण, स्व-रोजगार, योजनाओं

Corresponding Author
Pratibha Singh,
pratibharajput2722@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.4056

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

पंडित दीनदयाल उपाध्याय धार्मिक व्यक्ति थे, जो सांविधिक धर्म और पंचायत प्रणाली को श्रेष्ठ मानव जीवन का प्रस्तावक मानते थे। उनका विचार था कि राज्य तत्व की अवहेलना ने विदेशी ताकतों को भारत में प्रवेश दिया, जिसके कारण स्वराज्य का धर्मत्याजना पड़ा। उन्होंने लोकतंत्र के विचार को पश्चिमी और भारतीय अवधारणाओं से जोड़ा, और भारतीय लोकतंत्र के विश्लेषण के साथ लोकमत को परिष्कृत करने पर बल दिया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारत के सबसे तेजस्वी, तपस्वी एवं यशस्वी चिंतकों में से रहे हैं। उनके चिंतन के मूल में लोकमंगल एवं राष्ट्र-कल्याण का भाव समाहित है। उन्होंने राष्ट्र को धर्म, अध्यात्म एवं संस्कृति का सनातन पुंज बताते हुए राजनीति की नयी व्याख्या की। वह गाँधी, तिलक एवं सुभाष की परंपरा के वाहक थे। वह दलगत एवं सत्ता की राजनीति से ऊपर उठकर वास्तव में एक ऐसे राजनीतिक दर्शन को विकसित करना चाहते थे जो भारत की प्रकृति एवं परंपरा के अनुकूल हो एवं राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति करने में समर्थ हो। अपनी व्याख्या को उन्होंने 'एकात्म मानववाद' का नाम दिया, एक ओर उन्होंने जहाँ समाजवाद, माक्र्सवाद एवं पूँजीवाद सरीखे अभारतीय विचारधाराओं को भारतीय चिंतन-परंपरा, भारतीय दृष्टिकोण एवं भारतीय

जीवन-शैली के सर्वथा प्रतिकूल माना है। उन्हें अस्वीकार किया है। वहीं, दूसरी ओर भारतीय मानस के अनुकूल 'एकात्म मानव-दर्शन' व 'अन्त्योदय' की संकल्पना प्रस्तुत कर 'भारत को भारत की दृष्टि से' देखने-समझने का एक सार्थक सूत्र भी दिया है। पंडित जी का यह दर्शन अपनी संपूर्णता में मानव-जीवन को संतुलित, सुखी, संपन्न व आनंदमय बनाने का सूत्र प्रस्तुत करता है। इसमें संयमित उपभोग,अर्थायाम, अन्त्योदय, सृष्टि, व्यष्टि, समष्टि, परमेष्टि एवं 'पुरुषार्थ चतुष्टय' जैसे सूत्रों का प्रणयन किया गया है। ये सर्वथा दुर्लभ एवं अनिवार्य सूत्र हैं। ये सूत्र हमें मानव-मात्र के सम्यक मूल्याङ्कन की दिशा प्रदान करते हैं।

कदाचित् अभारतीय विचारधाराओं के अनुशीलन से हमें यह दिशा प्राप्त नहीं हो सकती। सहृदयता, बुद्धिमता, सक्रियता एवं अध्यवसायी वृत्ति वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक व्यक्ति नहीं, अपितु एक विचार और जीवन-शैली हैं। भारत और भारतीयता उनके जीवन और चिंतन का आवृत्त है, राष्ट्रसेवा को सर्वोपरि मानने वाले और राष्ट्र एवं समाज के प्रति आजीवन समर्पित रहने वाले पंडित जी ने अपने मौलिक चिंतन से राष्ट्र-जीवन को प्रेरित और प्रभावित किया वे 'राष्ट्रधर्म प्रकाशन' के संस्थापक एवं 'राष्ट्रधर्म', 'पांचजन्य', 'दैनिक स्वदेश' व 'तरुण भारत' जैसी राष्ट्रवादी पत्रिकाओं के प्रेरणास्रोत भी रहे हैं। भारतीय समाज-जीवन को सुखी, संपन्न एवं मंगलकारी बनाने के निमित्त उन्होंने 'अन्त्योदय दर्शन' की अद्भुत संकल्पना प्रस्तुत की।

2. अन्त्योदय दर्शन पर आधारित कुछ योजनाएं

2.1. कौशल प्रशिक्षण और स्थापन के माध्यम से रोजगार-

मिशन के तहत शहरी गरीबों को कुशल बनाने के लिए 15 हजार रुपये का प्रावधान किया गया है, जबकि पूर्वोत्तर और जम्मू-कश्मीर के लिए यह राशि 18 हजार रुपये प्रति व्यक्ति है। इसके साथ ही, शहरी आजीविका केंद्रों के माध्यम से शहरी नागरिकों द्वारा बाजारोन्मुख कौशल का प्रशिक्षण देने की मांग को पूरा किया जाएगा।

3. सामाजिक एकजुटता और संस्था विकास

सदस्य प्रशिक्षण के लिए स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) का गठन किया जाएगा, जिसमें प्रत्येक समूह को 10,000 रुपये का प्रारंभिक समर्थन दिया जाएगा। पंजीकृत क्षेत्रों के महासंघों को 50,000 रुपये की सहायता भी प्रदान की जाएगी।

4. शहरी गरीबों को सब्सिडी

सूक्ष्म उद्यमों (माइक्रो इंटरप्राइजेज) और समूह उद्यमों (ग्रुप इंटरप्राइजेज) की स्थापना के जरिए स्व-रोजगार को बढ़ावा दिया जाएगा। इसमें व्यक्तिगत परियोजनाओं के लिए 2 लाख रुपयों की ब्याज सब्सिडी और समूह उद्यमों पर 10 लाख रुपयों की ब्याज सब्सिडी प्रदान की जाएगी।

5. शहरी निराश्रय के लिए आश्रय

शहरी बेघरों के लिए आश्रयों के निर्माण की लागत योजना के तहत पूरी तरह से वित्त पोषित है।

6. अन्य साधन

बुनियादी ढांचे की स्थापना से विक्रेताओं के लिए बाजार का विकास एवं कौशल को बढ़ावा मिलेगा। इसके अलावा, कूड़ा उठाने वालों और विकलांगजनों के लिए विशेष परियोजनाएं भी शुरू की जाएंगी।

7. योजना की प्रभावशीलता

योजना की प्रभावशीलता शहरी गरीबों की स्वामित्व और भागीदारी पर निर्भर करती है, जिसमें कार्यक्रम के डिजाइन और कार्यान्वयन में पारदर्शिता, संस्थागत निर्माण, और क्षमता विकास शामिल है। सरकारी जिम्मेदारी और समुदाय की सहभागिता के साथ-साथ उद्योग और हितधारकों के साथ सामुदायिक आत्मनिर्भरता और सहयोग को बढ़ावा देती हैं।

राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (एनयूएलएम) का मुख्य विचार यह है कि गरीब लोग उद्यमी हैं और उनकी इच्छा चवअमतजल से बाहर निकलने की है। मिशन की चुनौती है उनकी क्षमताओं का सदुपयोग करते हुए उन्हें स्थायी और सार्थक जीविका के अवसर प्रदान करना।

राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (एनयूएलएम) का मानना है कि किसी भी आजीविका कार्यक्रम की सफलता समयबद्ध तरीके से तभी संभव है जब उसे गरीबों और उनके संस्थानों द्वारा संचालित किया जाए। इसके लिए एक मजबूत संस्थागत ढाँचा आवश्यक है, जो गरीबों को उनके मानव, सामाजिक, और वित्तीय संपत्तियों के निर्माण में सहायता करता है। यह प्रक्रिया लोगों को सरकारी और निजी क्षेत्रों से अधिकार, अवसर और सेवाएं प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। इसके साथ ही, यह उनकी एकता को सुदृढ़ करती है और अभिव्यक्ति एवं लेन-देन की क्षमता को भी बढ़ाती है। संविधान (74वां संशोधन) अधिनियम, 1992 के अनुसार, शहरी गरीबी उन्मूलन शहरी स्थानीय निकायों (यूएलबी) का कानूनी कार्य है। इसलिए, यूएलबी को शहरों और कस्बों में शहरी गरीबों के कौशल और जीविका से संबंधित मुद्दों और कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

8. योजना का उद्देश्य

कौशल विकास और ऋण सुविधाओं का उद्देश्य शहरी गरीबों को शामिल करना है। यह कार्यक्रम बाजार-आधारित कार्यों और स्वरोजगार के लिए कौशल प्रशिक्षण प्रदान करेगा और ऋण की सुगमता सुनिश्चित करेगा। सड़क विक्रेता ;फेरी एवं रेहडी पट्टीद्ध शहरी जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो आर्थिक पिरामिड के निचले स्तर पर हैं।सड़क विक्रय एक स्व-रोजगार का स्रोत है, जो शहरी गरीबी कम करने में सहायक होता है और प्रमुख सरकारी हस्तक्षेप के बिना काम करता है। यह शहरी आपूर्ति श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और शहरी क्षेत्रों में आर्थिक विकास की प्रक्रिया का हिस्सा है। एन.एल.यू. एम. का मुख्य उद्देश्य शहरी बेघर लोगों को आवश्यक सुविधाओं के साथ आश्रय प्रदान करना, संस्थागत ऋण सुलभ कराना, सामाजिक सुरक्षा देना और बाजार के उभरते अवसरों का लाभ उठाने के लिए उनके कौशल में वृद्धि करना है।

एन.एल.यू.एम. राज्य सरकारों के कार्यक्रमों के साथ समाभिरूपता पर जोर देगा, जो मंत्रालयों और विभागों से संबंधित योजनाओं, कौशल, आजीविकाओं, उद्यमिता विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक सहायता के कार्यों को निष्पादित करते हैं। ग्रामीण-शहरी प्रवासियों के कौशल प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के लिए सभी संबंधित विभागों से एक संयुक्त कार्यनीति बनाने का अनुरोध किया जाएगा, ताकि ग्रामीण और शहरी गरीब लोगों की आजीविका के बीच एक सेतु स्थापित किया जा सके।

एन.एल.यू.एम. का उद्देश्य शहरी बेघर लोगों को कौशल प्रशिक्षण, रोजगार और आश्रय संचालन में सहायता के लिए निजी क्षेत्र की भागीदारी को विकसित करना है। यह पहल शहरी बेघर लोगों को कौशल प्रशिक्षण, रोजगार और आश्रय प्रदान करने के लिए काम करेगी, साथ ही शहरी गरीब उद्यमियों को स्व-रोजगार एवं छोटे व्यावसायिक या विनिर्माण यूनिट स्थापित करने में सहायता करेगी। इसमें निजी और सिविल समाज के क्षेत्रों की भागीदारी को बढ़ावा देने पर जोर दिया जाएगा।

9. पं0 दीन दयालउपाध्याय के अन्त्योदय योजना का वर्तमान परिदृश्य

भारत सरकार ने शहरी और ग्रामीण गरीबों के लिए दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय योजना का आरंभ 25 सितंबर 2014 को किया। योजना का उद्देश्य कौशल विकास और अन्य उपायों के माध्यम से आजीविका के अवसरों में वृद्धि कर शहरी और ग्रामीण गरीबी को कम करना है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय योजना के दो घटक है एक शहरी भारत के लिए और एक ग्रामीण भारत के लिए। शहरी घटक का कार्यान्वयन केंद्रीय आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन मंत्रालय करेगा, जबकि ग्रामीण घटक, जिसका नाम पंडित दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना है, जिसका कार्यान्वयन केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा किया जाएगा।

योजना का उद्देश्य कौशल विकास के माध्यम से आजीविका के अवसरों में वृद्धि करना और शहरी एवं ग्रामीण गरीबी को कम करना है। यह मेक इन इंडिया कार्यक्रम के अनुसार सामाजिक और आर्थिक बेहतरी के लिए आवश्यक है। दीनदयाल अंत्योदय योजना को आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय के तहत शुरू किया गया है, जिसके लिए भारत सरकार ने 500 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है।

यह योजना, राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (एन.यू.एल.एम.) और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एन.आर.एल.एम.) का एकीकरण है। इसे दीनदयाल अंत्योदय योजना - (डी.ए.वाई. - एन.यू.एल.एम.) भी कहा जाता है। इसके तहत, शहरी क्षेत्रों में सभी 4041 शहरों और कस्बों को शामिल करते हुए शहरी आबादी को लक्षित किया जाएगा।

वर्तमान में, शहरी गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम केवल 790 कस्बों और शहरों को कवर करते हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय योजना-एनआरएलएम महिला स्वयं सहायता समूहों को ब्याज भुगतान में आर्थिक सहायता प्रदान करती है, जिससे ब्याज दर 7प्रतिशत वार्षिक हो जाती है। 250 जिलों में समय-समय पर 3 प्रतिशत अतिरिक्त छूट मिलती है, जिससे प्रभावी ब्याज दर 4 प्रतिशत वार्षिक हो जाती है। ब्याज सहायता के लिए 2,324 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है।

10. निष्कर्ष

पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय योजना और राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन का उद्देश्य शहरी गरीब परिवारों की गरीबी को कम करना है। यह योजना लाभकारी स्वरोजगार और कुशल मजदूरी के अवसर प्रदान करने पर केंद्रित है, जिससे उनकी आजीविका में स्थायी सुधार हो सके। इसमें शहरी बेघरों के लिए आवश्यक सेवाओं से लैस आश्रय प्रदान करना और सड़क विक्रेताओं को उभरते बाजारों तक पहुंचने के लिए संस्थागत ऋण, सामाजिक सुरक्षा और कौशल के माध्यम से सहायता करना शामिल है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पंडित दीनदयाल उपाध्याय और एकात्म मानव दर्शन प्रो. रसाल सिंह थ्तपए25 ैमचए 2020
पंसारी, एकता, पंडित दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि में अंत्योदय, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, 2006, पृष्ठ- 99।
देवरस, बालासाहब, हिन्दू संगठन और सत्तावादी राजनीति, जागृति प्रकाशन, पटना, 1997, पृष्ठ- 89।
मोदी, नरेन्द्र दामोदर सामाजिक समरसता, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2012, पृष्ठ-111।
उपाध्याय, पंडित दीनदयाल, भारतीय अर्थ नीति विकास की एक दिशा, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, 1998, पृष्ठ - 188।